# जनता का एक सदाबहार डॉक्टर

**कावेरी नंबीसन**

एक सफल डॉक्टर को पीछे मुड़कर देखने पर पश्चाताप नहीं करना होता। वैसे किसी मरीज़ से मिली आलोचना पश्चाताप का एक कारण होता है। मगर डॉ. नोशेर अन्टिया बहुत खुशी से यह बताते थे कि उन्हें सबसे बड़ा तोहफा उस कुष्ठ रोगी ने दिया था जिसने कृत्रिम जूता उनके ऊपर फेंककर कहा था कि यह उसकी ज़रूरत के अनुरूप नहीं है। "मुझे बहुत खुशी थी कि मैंने उसका पुनर्वास इतने अच्छे से किया था कि वह बगैर भय के अपनी बात कह पा रहा था।" उनको मिले अन्य पुरस्कारों में पद्मश्री तथा हंटेरियन प्रोफेसरशिप थे। हंटेरियन प्रोफेसरशिप वह सम्मान है, जो लंदन का रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स दुनिया भर से चुने हुए व्यक्तियों को देता है।

डॉ. अन्टिया डॉक्टरी पेशे के सारे सकारात्मक पहलुओं के प्रतिबिंब थे। पुणे में 26 जून 2007 के दिन 85 वर्ष की उम्र में देहान्त तक वे गरीबों की हालत और चिकित्सा पद्धतियों में सुधार की कोशिशों में लगे रहे। सर्जरी में वे उत्कृष्टता, वैज्ञानिक सटीकता, त्रुटिरहित तकनीकों और समर्पण के लिए संघर्ष करते रहे। बतौर एक प्लास्टिक सर्जन वे पुनर्निर्माण सर्जरी करते थे जिससे हज़ारों कुष्ठ रोगियों व जलने से पीड़ित व्यक्तियों को मदद मिली।

पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने बांग्लादेश के साथ सम्बंध स्थापित किए थे। मृत्यु से कुछ हफ्ते पूर्व ही वे एक सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की 35वीं सालगिरह में शामिल होने बांग्लादेश गए थे। डॉ. अन्टिया इस कार्यक्रम के साथ काम करते रहे थे। उन्होंने महाराष्ट्र में कई ग्रामीण स्वास्थ्य परियोजनाएं शुरू कीं, जहां कई युवा डॉक्टरों ने गांवों में काम करना व गांवों के लिए नवाचार करना सीखा।

भारत सरकार द्वारा लिए गए कई लोकहितकारी स्वास्थ्य सम्बंधी निर्णयों का श्रेय भी डॉ. अन्टिया को ही जाता है। चाहे वे राजनीतिज्ञों से कितनी भी नफरत करते रहे हों, मगर समतामूलक स्वास्थ्य नीति के निर्माण हेतु वे उनके साथ जद्दोजहद से कतराते नहीं थे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीतियों पर प्रभाव डालने के लिए वे प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह, अन्य मंत्रियों तथा नौकरशाहों से मिलते रहते थे।

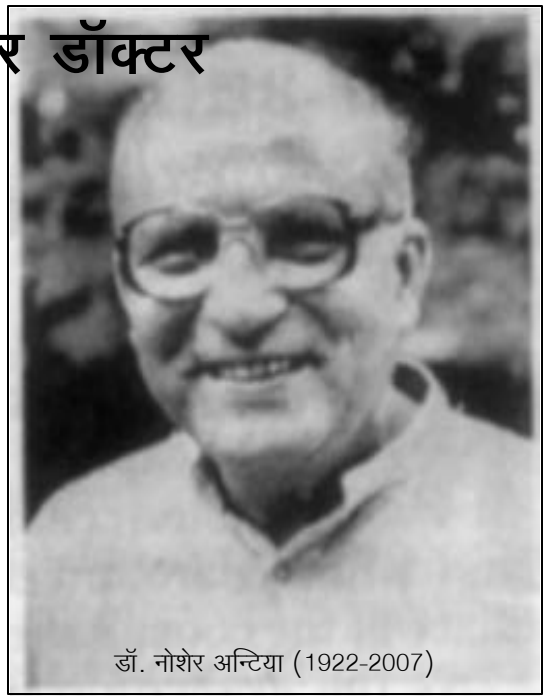

डॉ. नोशेर अन्टिया (1922-2007)

पांच वर्ष पूर्व उनसे परिचय मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। सर्जन्स के एक सम्मेलन में भोजन के दौरान मैंने उन्हें अपना परिचय दिया। उन्होंने मेरे बारे में, मेरे काम के बारे में कुछ सवाल पूछे और फिर कहा, "तुम हमारे साथ काम क्यों नहीं करती?" यही उनकी शैली थी; सीधी और औपचारिकताओं से मुक्त। मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया कि क्योंकि मैं जानती थी कि वे जो काम बताएंगे, वह सब करने की मुझमें न तो हिम्मत थी, न ऊर्जा। हर बार जब हम मिले, मैं उनकी ज़िन्दादिली, उनकी पैनी नज़र, चिकित्सा (तथा हर क्षेत्र) के नवीनतम मुद्दों पर उनकी पकड़ और खुद को विशेष मानने से उनके इन्कार से चकित रह जाती थी।

नोशेर अन्टिया का जन्म 8 फरवरी 1922 को एक पारसी परिवार में हुआ था। ये लोग हुबली के पास एक गांव में रहते थे। वे अक्सर उस समय की बातें बहुत खुशी से करते थे। वे बताते थे, "ज़्यादा पैसा नहीं था, बिजली नहीं थी, आने-जाने के लिए सिर्फ बैलगाड़ी थी, मगर बाकी बहुत कुछ था।"

स्कूली शिक्षा के बाद वे पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज और फिर बंबई के शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय में गए। उन्हें लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स की फेलोशिप मिली और वे नौ साल तक प्लास्टिक सर्जरी और पुनर्निर्माण सर्जरी सीखने के लिए काम करते रहे। वापिस लौटकर वे पुणे में देश के सर्वश्रेष्ठ प्लास्टिक सर्जन डॉ. कोयाजी के साथ काम करने लगे। बाद में वे बंबई के जे.जे. ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स में गए तथा 1960 में टाटा युनिट ऑफ प्लास्टिक सर्जरी के अध्यक्ष नियुक्त किए गए।

उस समय उनकी उम्र मात्र 38 साल थी और शायद वे इस पद के लिए काफी युवा ही थे मगर उन्होंने जल्दी ही अपनी नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। उन्होंने एक बार मुझे बताया था कि कुष्ठ के बारे में डॉक्टरों का नज़रिया बदलना कितना मुश्किल था। "जब मैंने कुष्ठ रोगियों को सामान्य वार्ड में भर्ती करना शुरू किया, तो अस्पताल ने मुझे चेतावनी दी थी कि इससे जन आक्रोश भड़क जाएगा।" मगर उन्होंने आगे बताया कि "ऐसा कुछ नहीं हुआ। वास्तव में भयभीत तो डॉक्टर ही थे।" डॉ. अन्टिया में जोखिम उठाने का साहस था, जो शायद सच्चे नेतृत्व का सबसे अहम गुण होता है।

## शोध का महत्व

डॉ. अन्टिया ने चिकित्सा में शोध के महत्व को पहचानकर 1974 में बंबई में फाउंडेशन ऑफ मेडिकल रिसर्च की स्थापना की। उन पर शिक्षाविद जे.पी. नाइक और सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे का बहुत प्रभाव था और वे अक्सर उनके बारे में बहुत स्नेह व कृतज्ञता से बातें करते थे। अलबत्ता, उनकी सबसे अच्छी दोस्त उनकी पत्नी अर्नी थीं जो उनके सारे विचारों और परियोजनाओं में सहभागी रहीं। उन्होंने 50 साल साथ-साथ गुज़ारे। डॉ. अन्टिया की मृत्यु के बाद, ज़ाहिर है, उन्होंने मातम में अपना समय बरबाद नहीं किया। वे उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं की भावी योजनाओं तथा उनकी शीघ्र प्रकाश्य आत्मकथा को लेकर आतुर थीं। यह खुशकिस्मती है कि मृत्यु से कुछ माह पहले ही डॉ. अन्टिया ने अपनी आत्मकथा पूरी कर ली थी।

सेवा निवृत्ति के बाद के 27 सालों में डॉ. अन्टिया जो कुछ कर पाए, वह उल्लेखनीय है। ग्रामीण इलाकों व कमज़ोर तबकों की ज़रूरतों को देखते हुए उन्होंने पुणे क्षेत्र में कई ग्रामीण स्वास्थ्य परियोजनाएं स्थापित कीं जो अपने आप में एक मॉडल है। उन्हें ग्रामीण महिलाओं की अंदरुनी शक्ति में बहुत भरोसा था और उन्होंने सुनिश्चित किया कि उन्हें आत्म निर्भरता सिखाई जाए। उनके नेतृत्व में फाउंडेशन फॉर रिसर्च इन कम्यूनिटी हेल्थ ने भारत सरकार के 'सबके लिए स्वास्थ्य' कार्यक्रम हेतु शोध सचिवालय का काम किया, तथा देश की प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा को एक दृष्टि, आकार व दिशा दी। वे कहा करते थे, "एक इण्डिया है, एक भारत है। जो इण्डिया चमकता है, उसके पास सब कुछ है; हमारा काम भारत के लिए होना चाहिए, जिसकी उपेक्षा हुई है।"

उन्होंने लोगों को सूचना का अधिकार कानून के प्रति जागरूक बनाने के काफी प्रयास किए। वे भारते के ग्रामीण सर्जन्स के संगठन के संस्थापक सदस्यों में से थे तथा प्रारंभिक वर्षों में इसके अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने बेशुमार युवा डॉक्टरों, स्वास्थ्यकर्मियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित किया ताकि वे स्वास्थ्य के प्रति एक सहजबुद्धि नज़रिया अपना सकें।

मृत्यु से एक साल पूर्व उन्होंने फाउंडेशन फॉर रिसर्च इन कम्यूनिटी हेल्थ की बागडोर एक ऐसे डॉक्टर के हाथों में सौंप दी थी जिन्होंने उनके साथ 35 वर्षो तक काम किया थाः डॉ. नर्गिस मिस्त्री।

डॉ. नोशेर अन्टिया परिष्कृत अकादमिक व भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले एक बिरले जीनियस थे। मैं यह जानकर बहुत दुखी हुआ कि जिस व्यक्ति ने सामुदायिक स्वास्थ्य और रोकथाम चिकित्सा को धरातल पर उतारने के लिए इतना कुछ किया, वह मलेरिया का शिकार हुआ, जिसकी रोकथाम व इलाज इतना आसान है। मैं जानता हूं कि इस पर वे कहते "यह एक चुनौती है। तुम मेरे बारे में लिखने की बजाय ऐसा कुछ करो जिससे मलेरिया के निदान व उन्मूलन में मदद मिले।" ***(स्रोत फीचर्स)***